Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

Paper Code
MAS-304

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination March – 2021

एम.ए. संस्कृत साहित्य, सत्रार्द्ध : तृतीय
संस्कृत, प्रश्न-पत्र : चतुर्थ
काव्यशास्त्र

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क
(दीघ-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. काव्यप्रकाशमनुसृत्य रसनिष्पत्ति सम्बन्धे आचार्याणां मतानां विवेचनाविधेया।
2. काव्यप्रकाशानुसारेण काव्यस्वरुपं समीक्ष्यताम्।
3. मम्मटानुसारेण आर्थीव्यञ्जनायाः भेदान् निरुप्यताम।?
4. 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' इति व्याख्यायताम्?
5. निम्नकारिकायाः विस्तृतरुपेण व्याख्या कार्या –

   'काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्व
   स्तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।
   केचिद् वाचां स्थितमविषये तत्त्वमूचुस्तदीयं
   तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरुपम्।।

खण्ड-ख
(लघु-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

1. निम्नलिखितकारिकायाः व्याख्या कार्या –

   शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
   काव्यज्ञशिक्षायाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।

2. अधोलिखितासु कारिकासु कस्यापि एकस्याः कारिकायाः व्याख्या विधेया–
   (क) सर्वेषां प्रायशोऽर्थानां व्यञ्जकत्वमपीष्यते।
   (ख) कान्तासम्मित तयो उपदेशयुजे।

3. निम्न कारिकायाः व्याख्या विधेया –
मुख्यार्थबाधे तद्योगे रुढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया।।

4. निम्नकारिकायाः ससन्दर्भं व्याख्या कार्या –
स्वसिद्धये पराक्षेपः परार्थं स्वसमर्पणम्।
उपादानं लक्षणं चेत्युक्ता शुद्धैवसा द्विधा।।

5. अधोलिखितेषु अलंकारेषु कयाश्चिद् द्वयोः अलंकारयोः सोदाहरणं व्याख्या विधेया –
श्लेष, यमक, विभावना, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, संसृष्टि।

6. निम्नकारिकायाः ससन्दर्भं व्याख्या कार्या –
यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः, स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।।

7. निम्नकारिकाः समीक्ष्यताम् –
प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु।।

----------x----------